# बहुभाषी परिदृश्य में बुनियादी साक्षरता शिक्षण में स्थानीय भाषा प्रयोग चुनौतियों से संभावनाओं की ओर बढ़ते कदम

सुनील कुमार बागवान*

यह शोध-पत्र प्राथमिक (बुनियादी) कक्षाओं में साक्षरता शिक्षण में बच्चों के घर की भाषा के उपयोग के बारे में है। यह बुनियादी साक्षरता शिक्षण में कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों की भाषा को शिक्षण प्रक्रियाओं में शामिल करने के महत्व की पड़ताल करता है। इसके लिए छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले की प्राथमिक कक्षाओं में कक्षा अवलोकन किए गए हैं। जिसमें यह देखा गया है कि साक्षरता के विविध कौशलों के विकास के लिए स्थानीय भाषाओं का शिक्षक कक्षा में कैसे उपयोग करते हैं? यह शोध रेखांकित करता है कि स्थानीय भाषाओं में विकसित पठन सामग्री का उपयोग, विद्यार्थियों के लिए साक्षरता में वृद्धि और भाषा अर्जन को सहज, सार्थक और प्रभावी बनाता है। इसके साथ ही, यह विद्यार्थियों को अपने सामाजिक संदर्भों और अपनी सांस्कृतिक पहचान से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है, जिससे विद्यार्थियों के सीखने के आत्मविश्वास और अधिगम-प्रेरणा में वृद्धि होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की दिशा के अनुरूप, यह अध्ययन मातृभाषा आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने की अनुशंसा करता है, जो न केवल साक्षरता के परिणामों में सुधार करता है, बल्कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को रोचक बनाने के पक्ष में एक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

## प्रस्तावना

प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना सीखने में कई प्रकार की समस्याएँ आती हैं, जिनमें मुख्य रूप से शिक्षण का माध्यम विद्यार्थियों के लिए किसी अपरिचित भाषा/कम परिचित भाषा का होना, विद्यार्थियों को विद्यालय में उपलब्ध लिखित पठन सामग्री से जुड़े पूर्व अनुभवों का अभाव और घर पर शैक्षिक कार्यों में किसी प्रकार की सहायता न मिल पाना आदि होते हैं (एन.सी.एफ., 2005; झिंगरन, 2012; मेनन, 2017)।

*पीएच.डी. शोधार्थी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110 067

छोटे बच्चों को वयस्कों की तरह पढ़ने और लिखने के उद्देश्य के बारे में पता नहीं होता तथा स्कूल की संस्कृति विद्यार्थियों की घर की संस्कृति से मेल नहीं खाती है। ऐसे में अक्सर ये बच्चे स्कूल में चलने वाली शिक्षण प्रक्रियाओं में रुचि नहीं ले पाते और परिणामस्वरूप ये प्रक्रियाएँ उबाऊ बन जाती हैं (रा.शै.अ.प्र.प., 2009; मेनन, 2017)।

एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर, छत्तीसगढ़ के द्वारा किए गए 'भाषा सर्वेक्षण' (2021) के आँकड़े दर्शाते हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य में विद्यार्थियों की स्थानीय भाषाएँ, जैसे— छत्तीसगढ़ी, गोंडी और हल्बी... जैसी स्थानीय भाषाएँ होती हैं। विद्यार्थियों की मातृभाषा भाषा और औपचारिक स्कूली भाषा के बीच का अंतर विद्यार्थियों के सीखने में बाधाएँ उत्पन्न करता है। बच्चों की भाषा और संस्कृति को प्राथमिक स्कूल में स्थान न मिल पाना एक चिंता का विषय रहा है। बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा सहायता (स्कैफोल्डिंग) करने के लिए बच्चों की भाषा का प्रयोग, एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में पहचाना गया है (कुमार, 2011; एन.सी.एफ., 2005; एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022)।

एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 यह सुझाते हैं कि बहुभाषी विद्यालयी परिवेश की स्थिति में बच्चों की भाषा को कक्षाओं में स्थान देकर, मातृभाषा आधारित शिक्षा और सांस्कृतिक समावेशिता को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इस विषय में और भी गहराई से अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। यह शोध छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले की प्राथमिक कक्षाओं में साक्षरता विकास के लिए मातृभाषा के महत्व का पता लगाने का प्रयास करता है। यह शोध इस प्रश्न की खोज करता है कि मातृभाषा का उपयोग शिक्षण प्रक्रियाओं में विद्यार्थियों की भागीदारी और साक्षरता परिणामों को किस प्रकार प्रभावित करता है?

## शोध अभिकल्प

यह अध्ययन गुणात्मक शोध डिजाइन और उद्देश्यपूर्ण सैंपलिंग का अनुसरण करता है, जिसमें कक्षा अवलोकन और सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार शामिल हैं। ये अवलोकन और साक्षात्कार छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए हैं। आँकड़ों का संग्रह चार प्राथमिक विद्यालयों में किया गया था। इसके लिए चयनित विद्यालयों में शिक्षण का माध्यम हिंदी है और शिक्षक छत्तीसगढ़ी एवं हिंदी भाषाओं का प्रयोग शिक्षण अधिगम में करते हैं। राज्य द्वारा पाठ्यपुस्तक और अभ्यास पुस्तक के अतिरिक्त चित्र चार्ट, कहानी की किताबें और अन्य पठन सामग्री भी इन विद्यालयों को हिंदी और छत्तीसगढ़ी भाषा में उपलब्ध करवाई गई है। विद्यार्थियों के साक्षरता परिणामों की जाँच शिक्षकों ने की है तथा इन परिणामों की तुलना जिले में किए गए व्यापक सर्वेक्षणों से प्राप्त परिणामों से की गई है।

## आँकड़ों का विश्लेषण और चर्चा

प्रस्तुत शोध के दौरान दोनों ही चयनित विद्यालयों में किए गए कक्षा अवलोकन और कक्षा-शिक्षकों के साथ साक्षात्कार दर्शाते हैं कि इन विद्यालयों में साक्षरता निर्देश में विद्यार्थियों की भाषाओं (छत्तीसगढ़ी और हिंदी) के एकीकरण से उनकी सहभागिता और मौखिक भाषा कौशल में उल्लेखनीय

सुधार हुआ। शिक्षकों ने जब छत्तीसगढ़ी कविताओं, कथाओं और गीतों का उपयोग पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए कक्षा में किया, तो विद्यार्थी सीखने में उत्साह दर्शाते थे और वे पठन सामग्री को बेहतर ढंग से समझ पाते थे। शिक्षकों ने पाया कि जब विद्यार्थियों को उनकी अपनी भाषा कि कहानियों और कविताओं पर आधारित शिक्षण में भाग लेने और जोर से पढ़ने या अपनी कहानियाँ लिखने जैसे कार्य करने के लिए दिए गए, तो विद्यार्थी इन कार्यों को करने में अधिक इच्छुक होते थे। इस पूरे सीखने-सिखाने के उत्साहित वातावरण में विद्यार्थी छत्तीसगढ़ी के साथ-साथ हिंदी भाषा सीखने में भी तत्परता दिखाते थे।

उदाहरण के लिए विद्यालय की कक्षा 1 का यह अवलोकन दर्शाता है कि शिक्षिका छत्तीसगढ़ी और हिंदी कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों के बीच मौखिक भाषा विकास का समृद्ध वातावरण किस प्रकार तैयार करती हैं और साक्षरता कौशलों के विकास हेतु विभिन्न गतिविधियाँ किस प्रकार नियोजित करती हैं—

**शिक्षिका**— "आज कौन कविता-कहानी सुनाएगा?" शिक्षिका ने गोल घेरे में बैठे हुए सभी बच्चों को देखते हुए (छत्तीसगढ़ी भाषा में) पूछा।

**कक्षा के सभी बच्चे**— कक्षा में लगभग सभी बच्चे कविता-कहानी सुनाने के लिए उत्साहित और तैयार थे। बालिका-अ बोली— "'चंदा मामा दुरिहा हे' कविता सुनाबे", बालक-ब बोला— "मैम तौला एकठन नई कबिता सुनाबे", बालिका-स बोली— "'बादर गजरे नारियाये मेचका' सुनाबो" ... सभी बच्चे (छत्तीसगढ़ी भाषा में) इन कविताओं को सुनाने के लिए अपना-अपना दावा मजबूती से प्रस्तुत कर रहे थे।

**शिक्षिका**— शिक्षिका बोर्ड पर दो बच्चों के नाम लिख देती हैं, जिनको आज कविता गाने या पढ़ने का अवसर दिया गया था "पहले तुम शुरू करो, हम सब साथ गाएँगे, फिर बाकी वन नंबर के बाद में आएँगे" शिक्षिका ने (छत्तीसगढ़ी और हिंदी भाषा में निर्देश दिया) बोर्ड पर लिखे गए नामों की ओर इशारा करते हुए कहा पहले बालिका-अ "चंदा मामा दुरिहा हे" कविता गाएगी।

**बालिका-अ**— "चंदा मामा दुरिहा हे" आत्मविश्वास और हाव-भाव के साथ गाती है।

**कक्षा के सभी बच्चे**— "चंदा मामा दुरिहा हे" समूह में हाव-भाव के साथ कविता की पंक्ति को दोहराते हैं।

उपरोक्त कक्षा अवलोकन से पता चलता है कि विद्यार्थी और शिक्षक दोनों छत्तीसगढ़ी और हिंदी भाषा में चर्चा में लगे हुए हैं। यह विद्यार्थियों की घरेलू भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग करने और हिंदी भाषा को सार्थक संदर्भ में सीखने के सिद्धांत के अनुरूप है, जो एक समावेशी और सहायक शिक्षण वातावरण बनाने के लिए महत्वपूर्ण है (अग्निहोत्री, 2008)। इस कक्षा में स्थानीय कविताओं को हाव-भाव के साथ गाने और चर्चा करने का सिलसिला एक उत्साहित वातावरण में चलता है। बच्चों से चर्चा करते हुए शिक्षिका कविता में आए मुख्य शब्दों को बोर्ड पर लिखती हैं, इन शब्दों की पहली आवाज कौन-सी है, इस आवाज या ध्वनि से शुरू होने वाले अन्य शब्द कौन-से हैं ... आदि गतिविधियाँ विद्यार्थियों को लिपि

चिह्न सिखाने और समग्र लेखन के अवसर देने हेतु चित्र बनवाने और उन चित्रों के नाम लिखने जैसे कार्य शिक्षका कक्षा में करती हैं। कक्षा में यह कविता-पोस्टर तथा अन्य तीन कविता-पोस्टर कक्षा की दिवार पर प्रदर्शित थे (चित्र 1 देखें— छत्तीसगढ़ी कविता-पोस्टर), जिन्हें बच्चे भोजन अवकाश में आसानी से देख पा रहे थे। भोजन अवकाश में जल्दी से खाना खाने के बाद 5–6 बच्चे इस कविता-पोस्टर के पास में खड़े थे और

**चित्र 1**— छत्तीसगढ़ी कविता-पोस्टर

वे झुंड में ही इस कविता को गुनगुनाने लगे। कविता की तीसरी पंक्ति पर आकर ये 4–5 बच्चे रुक गए। इनके चुप होते ही पास में बैठी खाना खा रही बालिका-अ ने बैठे-बैठे ही अगली लाइन गाना शुरू कर दिया, अब वे सब खुशी-खुशी कविता को आगे गाने लगे। इस कविता पोस्टर के पास खड़े इन 4–5 बच्चों ने पुनः इस कविता को गाया और सफलतापूर्वक पूरा गाकर अगले पोस्टर की तरफ बढ़ गए। भोजन अवकाश में भी विद्यार्थियों का इस प्रकार कविताओं का बिना किसी निर्देश के गायन करना उनके जुड़ाव को और आपस में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को दर्शाता है (जयराम, 2008)।

एक अन्य उदाहरण में पाया गया कि प्राथमिक स्कूल 1, कक्षा 1 शिक्षिका ने कक्षा की शुरुआत में बच्चों से अनुभव और कहानियाँ उनकी भाषा (बच्चों की अपनी भाषा) में सुनीं और उसके बाद हिंदी भाषा में बिग-बुक से एक कहानी पढ़कर सुनाई तथा उस कहानी पर चर्चा और लेखन संबंधित कार्य किए। बच्चों से उनकी भाषा में कहानी सुनने की कक्षा प्रक्रिया का प्रमुख अवलोकन इस प्रकार है, जहाँ बच्चे उत्साहित हैं और अपनी भाषा में अपनी कहानियाँ और अपने अनुभव सुना रहे हैं तथा शिक्षिका से भी दिवार पर लगे एक नए कविता-पोस्टर से कविता गवाने की जिद कर रहे हैं—

**शिक्षिका**— "आज कहानी सुनाने की किसकी बारी है?" शिक्षिका ने बच्चों से (हिंदी भाषा में) पूछा।

**बालिका-द**— छत्तीसगढ़ी भाषा में "चुरकी-मुरकी" कहानी सुनाने की अब मेरी बारी है। यह बालिका शिक्षिका की बात पूरी होते ही जल्दी से बोली थी, जैसे उसे अपनी बारी का इंतजार था।

**शिक्षिका**— शिक्षिका ने मुस्कुराते हुए इशारे से कहानी सुनाने की अनुमति दी, बाकी विद्यार्थी भी थोड़ा आगे सरककर उस की ओर आ गए थे। अब बालिका-द ने तुरंत ही छत्तीसगढ़ी भाषा में कहानी सुनाना शुरू कर दिया था।

**बालिका-द**— "एक चुरकी थी ...एक मुरकी से बालिका कहानी सुनाना शुरू किया और...धीरे-धीरे पूरी कहानी सुनाई और सबने ध्यान से सुनी। इस छत्तीसगढ़ी कहानी को बालिका की धीमी आवाज में भी सभी बच्चे बड़े ध्यान से सुनते रहे।

**शिक्षिका**— अंत में शिक्षिका ने (छत्तीसगढ़ी में) मुरकी को शहद, दूध क्यों मिला? आपको चुरकी और मुरकी में से कौन अच्छा लगा? आदि सवाल पूछे।

**कक्षा के सभी विद्यार्थी**— अधिकाँश बालक उत्साह के साथ कहानी पर आधारित सही जवाब दे पा रहे थे। (कुछ बच्चे अपनी जगह पर खड़े हो गए, वे अभी कुछ कविताएँ और सुनाना चाहते थे। शिक्षिका ने दो विद्यार्थियों से कविताएँ सुनी और विद्यार्थियों से कहा कि अब आप कल कविता सुनाना, आज हम अगला काम करेंगे। बच्चे अध्यापिका की बात सुनकर सहमत दिखे ओर वापस अपनी जगह पर घेरे में बैठ गए। शिक्षिका ने अब अगला अभ्यास बिग-बुक से छत्तीसगढ़ी कहानी 'हाथी और बकरी' पर कार्य करवाया और कहानी पर आधारित चित्र बनवाने का काम भी करवाया, कक्षा प्रक्रिया को संक्षेप में सारणी 1 और 2 में दर्शाया गया हैं। बच्चों की अभिव्यक्ति के नमूने को चित्र 2 में देखें।)

**सारणी 1— शिक्षणकार्य का भाग-1 अर्थ केंद्रित शिक्षण कार्य**

पिछले दिन से जुड़ाव बनाने के लिए बिग-बुक के मुख्य पृष्ठ व कहानी को मिलाकर पुनः पढ़ना

↓

कहानी की मुख्य घटनाओं से संबंधित खुले उत्तर वाले प्रश्न व चर्चा

↓

बच्चों से कहानी पर आधारित चित्र बनाने के लिए कहना

| | | |
|---|---|---|
| हाथी का चित्र | चिड़िया का चित्र | घोसले का चित्र |

↓

बच्चों से चित्र का नाम लिखवाना और लेखन में बच्चों की मदद करना

| | | |
|---|---|---|
| हाथी | चिड़िया | घोसले |

↓

चित्र से संबधित बात बोलकर-लिखवाना और लेखन में सहयोग करना

| | |
|---|---|
| हाथी वन में रहता है। | चिड़िया घोंसले में अंडे देती है। |

**सारणी 2— शिक्षणकार्य का भाग-2 कौशल/ केंद्रित शिक्षण कार्य**

योजना अनुसार उप-समूह बनाना स्तर

| | |
|---|---|
| कक्षा अनुसार डिकोडिंग सीख रहे बच्चे— समूह 1, 2 और 3 | कक्षा अनुसार डिकोडिंग सीखने में संघर्ष कर रहे बच्चे— समूह-4 |
| ↓ | ↓ |
| ग्रिड से अक्षरों को मिलाकर | अपना नाम देखकर लिखना |
| ↓ | ↓ |
| पिछले दिन सीखे गए वर्णों और सीखी गई मात्रा का दोहराव | चित्र बनाना |
| ↓ | ↓ |
| सीखी गई मात्रा का उपयोग कर नए शब्द लिखवाना | नाम की पहली ध्वनि पर चर्चा |
| ↓ | ↓ |
| बोर्ड पर मिलाकर सरल शब्द लिखना | चित्रों वाली किताब से चित्र देखना और चर्चा करना |

उपरोक्त अवलोकन में कविता गायन गतिविधि के दौरान देखने को मिलता है कि बालिका-द ने एक पाठ्यपुस्तक से परे कहानी ‘चुरकी-मुरकी’ छत्तीसगढ़ी में सुनाई, जिस पर आधारित बातचीत में अन्य विद्यार्थी भी कहानी की विषयवस्तु पर आधारित जवाब दे पा रहें हैं। यह पूरी बातचीत छत्तीसगढ़ी और हिंदी भाषा में साथ-साथ हुई और शिक्षिका ने इस पूरी बातचीत में विद्यार्थियों को भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया और कहानी पर आधारित सवाल पूछकर सभी विद्यार्थियों को कहानी से जोड़ा, सरल प्रश्नों के माध्यम से यह आकलन भी साथ-साथ किया कि बच्चे कहानी समझ रहे हैं या नहीं। अंत में बच्चों का कविता गायन के लिए जिद्द करना दर्शाता है कि यह गतिविधि पूर्व में भी होती रही है और शिक्षिका के साथ बच्चों का रिश्ता भावनात्मक रूप से मजबूत भी है।

इस कक्षा के दूसरे हिस्से में किए गए अवलोकन से पता चलता है कि शिक्षक ने ‘फोर ब्लॉक लिटरेसी टीचिंग मॉड्यूल’ आधारित (मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग, रीडिंग एंड राइटिंग आदि घटकों पर आधारित) दैनिक शिक्षण लागू किया। इन विद्यालयों में मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग, रीडिंग एंड राइटिंग आदि घटकों के शिक्षण में संतुलन बनाने के लिए की गई गतिविधियाँ, जैसे— कविता-गायन, डिकोडिंग शिक्षण के अभ्यास के नमूने आदि। शिक्षक पहले खुद करके बच्चों को दिखाते हैं। इसके बाद बच्चों को उस कार्य को करने में सहायता देते हैं। इन कक्षाओं में शिक्षक कक्षा-शिक्षण के दौरान किसी भी साक्षरता घटक के शिक्षण के दौरान बच्चों को हिंदी भाषा में शिक्षण निर्देश देते हैं, अपने निर्देश को बच्चों को समझाने के उद्देश्य से आवश्यकता अनुसार छत्तीसगढ़ी में पुनः दोहराते हैं।

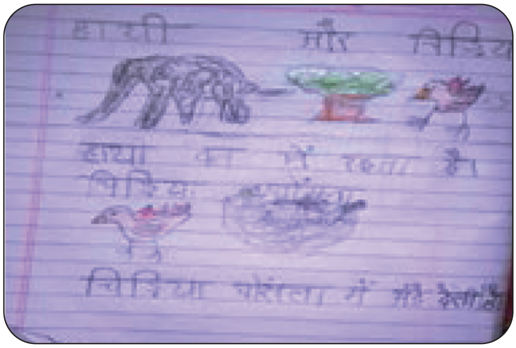

**चित्र 2**— कहानी पढ़कर सुनाने की गतिविधि के बाद विद्यार्थियों से लिखित अभिव्यक्ति पर कार्य का एक नमूना

दुर्ग जिले की एक शिक्षिका मंजू साहू कक्षा शिक्षण के बाद चर्चा में बताती हैं कि “मैंने कक्षा में पाठ्यपुस्तक और अभ्यास-पुस्तक के अलावा हिंदी और छत्तीसगढ़ी भाषा की अन्य पाठ्य सामग्रियों को शामिल करके कक्षा-शिक्षण में बच्चों की भागीदारी में एक बड़ा अंतर देखा है। लंबे समय से पाठ्यपुस्तक केंद्रित शिक्षण के दौरान यह देखना मेरे लिए निराशाजनक था कि कुछ विद्यार्थी शिक्षा के माध्यम हिंदी में खुद को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए संघर्ष करते थे। खासकर जब पाठ्यपुस्तक के बड़े पाठों पर या गणित के इबारती सवालों पर चर्चा करते थे। इसलिए, मैंने चर्चाओं और कहानी कहने के सत्रों के दौरान छत्तीसगढ़ी का उपयोग करने को प्राथमिकता देना शुरू किया और पाया कि अब ज्यादातर बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और हिंदी कहानियों को समझने में ज्यादा सक्षम हो रहे हैं।”

चयनित कक्षाओं में शोधकर्ता द्वारा किए गए विद्यालय अवलोकन और साक्षात्कार दर्शाते हैं कि विद्यार्थी अपनी भाषा और सांस्कृतिक से जुड़ाव आधारित सामग्री से सीखते समय विद्यार्थियों ने मौखिक अभिव्यक्ति और पढ़ी गई सामग्री पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने में उत्साह और आत्मविश्वास दर्शाया। कक्षा-शिक्षकों ने साझा किया कि विद्यार्थियों को उनकी अपनी भाषा में कहानी सुनाना और सुनना एक रोचक गतिविधि है। दुर्ग जिले के शिक्षक 'मिलिंद चंद्रा' बताते हैं कि "जब कक्षा 1 और 2 के बच्चों से चित्र चार्ट पर उनकी भाषा में चर्चा करने के बाद, उन्हें चित्र बनाने या उनसे जुड़े शब्द लिखने की गतिविधि दी गई, तो विद्यार्थी बेहतर लिखित अभिव्यक्ति का प्रदर्शन करते हैं"।

सुरेंद्र पांडे, जिला मिशन समन्वयक, समग्र शिक्षा, बताते हैं कि "दुर्ग जिले में राज्य सरकार और लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा मिलकर सत्र 2019 से हमारे जिले में 'नींव अधिगम संवर्धन कार्यक्रम' चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत भाषा शिक्षण के लिए चार ब्लॉक आधारित संतुलित भाषा शिक्षण पद्धति का प्रयोग किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में बच्चों की भाषा का उपयोग कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में लगातार किया जा रहा है। मेरा अनुभव रहा है कि स्थानीय भाषा प्रयोग से कक्षाओं में विद्यार्थियों की भागीदारी में बढ़ोतरी हुई है और समझते हुए पढ़ना सीखने वाले विद्यार्थियों की संख्या में गुणात्मक रूप से भी वृद्धि हुई है"।

इस परियोजना के जिला प्रबंधक, रामरतन बताते हैं कि "हमने 'नींव' कार्यक्रम के तहत दुर्ग जिले में कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार की, जिसमें हिंदी और छत्तीसगढ़ी भाषाओं को शामिल किया। इस प्रक्रिया में भाषा विशेषज्ञों और स्थानीय शिक्षकों और समुदाय के सहयोग से सामग्री का निर्माण किया गया, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि पाठ्यसामग्री बच्चों की समझ के अनुरूप हो। मैंने अपने स्कूल निरीक्षणों के दौरान पाया है कि बच्चों के लिए तैयार यह सामग्री रुचिकर है, इस सामग्री में शामिल कविताओं को शिक्षकों के द्वारा हाव-भाव से गायन करवाने के बाद विद्यार्थी आपस में मिलकर गाते हैं और आसानी से याद रख पाते हैं। कविताओं-कहानियों में आए स्थानीय शब्द विद्यार्थियों को ध्वनि जागरूकता और डिकोडिंग सीखने में मदद करते हैं, जो उनके लिए पढ़ने-लिखने का आधार का काम करता है"।

इन सभी तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में विद्यार्थियों के साक्षरता विकास हेतु उनकी घर की भाषा/मातृभाषा को एक सेतु के रूप में जोड़ने वाली यह शैक्षिक प्रक्रियाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में निहित प्रावधानों से मेल खाती हैं। छत्तीसगढ़ में दुर्ग जिले जैसे बहुभाषी क्षेत्र में हिंदी के साथ-साथ छत्तीसगढ़ी भाषा में शिक्षण निर्देश और स्थानीय भाषा में पठन सामग्री पर आधारित शिक्षण को शामिल करने जैसे शैक्षिक प्रयास बच्चों के लिए उपयुक्त, संदर्भ आधारित और प्रभावी शिक्षा प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

इस शोध के निष्कर्ष साक्षरता विकास में विद्यार्थियों की भाषा का शिक्षण में प्रयोग के पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि करते हैं। प्रारंभिक कक्षा के साक्षरता निर्देश में मातृभाषा का शिक्षण में प्रयोग करने पर विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में अधिक सार्थक रूप से शामिल हो पाए। शिक्षण में मातृभाषा के उपयोग ने साक्षरता को अधिक सुलभ और आनंददायक बना दिया, क्योंकि विद्यार्थी विषयवस्तु से जुड़ सकते थे और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया अर्थपूर्ण थी। यह शोध दर्शाता है कि प्राथमिक शिक्षा में इन स्थानीय भाषा की कविताओं, कहानियों और शिक्षण का माध्याम द्विभाषी होने से साक्षरता शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं में विद्यार्थियों का जुड़ाव और कक्षा सहभागिता में वृद्धि हो सकती है। शैक्षिक शोध में यह स्थापित किया गया है कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाना उनके भाषा कौशल को विकसित करने और साक्षरता स्तर में सुधार लाने में सहायक होता है (मिश्रा, 2024)। भारत में किए गए अन्य शोधों से भी यह प्रमाणित हुआ है कि स्थानीय साहित्य, कहानियाँ और कविताएँ बच्चों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाती हैं (कुमार, 2011; रा.शै.अ.प्र.प., 2022; मिश्रा, 2024)। स्थानीय साहित्य बच्चों को उनके पूर्व-ज्ञान और अनुभवों से जोड़ता है, जिससे विद्यार्थी नए शब्दों और भाषा संरचनाओं को जल्दी सीखते हैं। कक्षा शिक्षण में जब कविताओं को चित्रों, पोस्टरों और मौखिक चर्चा के साथ प्रस्तुत किया जाता है, तब बच्चों की सुनने, बोलने और समझने की क्षमताएँ अधिक विकसित होती हैं (एल.एल.एफ., 2018; झिंगरन, 2012)। शिक्षण में कविता और कहानी सुनाने की गतिविधियों से जोड़ा जाता है, तब यह संज्ञानात्मक विकास और भाषायी अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है (मिश्रा, 2013)। शोध में यह पाया गया है कि कक्षा में संवादात्मक विधियों (इंटरैक्टिव मैथड्स) का उपयोग बच्चों की सीखने की क्षमता को बढ़ाता है (एन.सी.एफ., 2005; रा.शै.अ.प्र.प., 2009)। विशेष रूप से, जब शिक्षक चित्रों, पोस्टरों और मौखिक भाषा का चर्चाओं में उपयोग करते हैं, तब यह विद्यार्थियों की सहभागिता को अधिक प्रभावी बनाता है। मातृभाषा में शिक्षण और संवादात्मक कक्षा तकनीकों का उपयोग विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को गहरा करता है। मिश्रा (2024) के अध्ययन में भी यह पाया गया कि भारत की बहुभाषी कक्षाओं में जब स्थानीय साहित्य और कहानियों का उपयोग किया गया, तब बालिकाओं की भाषा दक्षता और समझने की क्षमता में वृद्धि हुई। एन.सी.एफ. 2005 और एन.ई.पी. 2020 तथा एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 भी इस बात पर जोर देते हैं कि भाषा शिक्षण में सांस्कृतिक और स्थानीय संदर्भों का समावेश बालक-बालिकाओं के सीखने को अधिक प्रभावी बना सकता है (मिश्रा, 2024)।

शिक्षा में स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्रियों का उपयोग एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के उद्देश्यों के अनुरूप है। ये नीतियाँ इस निष्कर्ष का समर्थन करती हैं कि मातृभाषा आधारित शिक्षा सामाजिक समावेश और सांस्कृतिक निरंतरता को बढ़ावा देते

हुए साक्षरता परिणामों में सुधार कर सकती है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि विभिन्न मातृभाषा का समावेश कक्षा में साक्षरता के स्तर को बढ़ाता है। आखिरकार, यह शोध इस बात की पुष्टि करता है कि मातृभाषा आधारित 'बुनियादी-साक्षरता-शिक्षा' न केवल बच्चों के लिए भाषा अधिगम के लिए लाभदायक साधन है, बल्कि यह ग्रामीण और आदिवासी समुदायों की भाषाओं और सांस्कृतिक संरक्षण का भी एक प्रभावी तरीका है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा नीतियाँ और कक्षा शिक्षण रणनीतियाँ बच्चों की मातृभाषा और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप तैयार की जाएँ, ताकि वे एक समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से सशक्त शिक्षा प्राप्त कर सकें (मिश्रा, 2024)।

## उपसंहार

प्रस्तुत शोध मातृभाषा को शिक्षण माध्यम और सहायक शिक्षण सामग्री, जैसे— कविताओं और कहानियों को एकीकृत करने के महत्व पर जोर देता है। यह दर्शाता है कि मातृभाषा शिक्षा का उपयोग न केवल साक्षरता परिणामों को बढ़ा सकता है, बल्कि भारतीय ग्रामीण तबकों में गैर-हिंदी बच्चों को स्कूल के भीतर सीखने के सार्थक अनुभव और अर्थपूर्ण वातावरण भी प्रदान करता है। शोध परिणाम दर्शाते हैं कि स्थानीय भाषाओं को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने से शैक्षिक और सांस्कृतिक लाभों में बेहतरी देखने को मिलती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और बुनियादी स्तर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022) में निहित मातृभाषा में शिक्षा संबंधित प्रावधानों का समर्थन करते हैं। इन प्रथाओं को अपनाकर स्कूल शिक्षा में साक्षरता कौशल में सुधार लाने की दिशा में एक प्रभावी विकल्प देखा जा सकता है। यद्यपि भविष्य में आगे किए जाने वाले शोधों में इस दृष्टिकोण के दीर्घकालिक प्रभाव और विकेंद्रीकृत नियोजन और क्रियान्वयन का पता लगाना चाहिए और भारत के विभिन्न बहुभाषी क्षेत्रों में इसके क्रियान्वयन का विस्तार और सुधार करने के तरीकों पर विचार करना चाहिए।

## संदर्भ


अग्निहोत्री, आर.के. 2008. *प्राशिका : एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा में नवाचारी प्रयोग*. एकलव्य, भोपाल.

एस.सी.ई.आर.टी., समग्र शिक्षा, यूनिसेफ और एल.एल.एफ. 2021. *छत्तीसगढ़ में विद्यालयों का भाषा मानचित्रण*. लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://cgschool.in/img/LMReportCG_Hindi_Final.pdf

एस.सी.ई.आर.टी. 2022. हिंदी पाठ्यपुस्तक. (कक्षा 1–3). राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, रायपुर, छत्तीसगढ़. https://scert.cg.gov.in/pdf/textbook.htm

कुमार, के. 2011. *बच्चे की भाषा और अध्यापक— एक हैंडबुक*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.

जयराम, के. 2008. अर्ली लिटरेसी प्रोजेक्ट— अन्वेषण और विचार; भाग 1— सैद्धांतिक दृष्टिकोण. *समकालीन शिक्षा संवाद*. 5(2), पृ.सं. 134–174.

झिंगरन, डी. 2005. *भाषा असमानता— प्राथमिक शिक्षा में सीखने की चुनौती*. ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली.

———. 2012. प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाई की उपलब्धियों को प्रभावित करने वाले स्कूल आधारित शैक्षिक कारकों का अध्ययन. पीएच.डी. शोध-पत्र. जमिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.

मिश्रा, एम.के. 2024. *एरा-एरा-मल्टीलिंगुअल एजुकेशन इन ट्राइबल स्कूल्स ऑफ इंडिया : वॉयस फ्रॉम ब्लो*. मानक पब्लिकेशन प्रा.लि., नई दिल्ली.

मेनन, एस., आर. कृष्णमूर्ति, एस. सजीथा, एन. आपटे, ए. बासार्गेकर, एस. सुब्रमानियम, एम. नलकामानी और एम. मोदीगला. 2017. भारतीय भाषाओं में साक्षरता अनुसंधान— मराठी और कन्नड़ में प्रारंभिक पढ़ाई और लेखन पर तीन वर्षीय लंबी अवधि का अध्ययन. अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु और टाटा ट्रस्ट्स, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली http://www.ncert.nic.in/html/pdf/schoolcurriculum/framework05/prelims.pdf

———. 2009. *भारतीय भाषा और भाषा शिक्षण, एक स्थिति पत्र 2009*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन. 2018. *प्राथमिक भाषा कक्षाओं में अकादमिक समर्थन— प्रशिक्षण मॉड्यूल*. लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf